भारत 130 अरब डॉलर का निवेश कर रहा

भारत बन चुका है निवेशकों के लिए सबसे भरोसेमंद : मंत्री पीयूष गोयल

नई दिल्ली, 04 जून. केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा है कि मोदी सरकार की नीतियों और सुधारों के चलते आज भारत विश्व के सबसे भरोसेमंद निवेश गंतव्य के रूप में उभरा है.

उन्होंने मुंबई में आयोजित सिटी इंडिया कॉन्फ्रेंस 2026 को गुरुवार को वीडियो कांफ्रेंसिंग सुविधा के माध्यम से संबोधित करते हुए देश में विनिर्माण, व्यापार करने में सुगमता, बुनियादी ढांचे, भविष्योन्मुखी प्रौद्योगिकी अपनाने और वैश्विक व्यापार के साथ जुड़ाव मजबूत करने के लिए सरकार के प्रयासों का खाका प्रस्तुत किया. सम्मेलन में दुनिया भर के निवेशक और व्यापार जगत के नेता भाग ले रहे हैं. श्री गोयल ने कहा कि भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बना हुआ है आने वाले दो दशकों में भारत की वृद्धि दर ऊंची बनी रहेगी. उन्होंने कहा कि भारत ने बदलती भू-राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप प्रक्रियाओं और व्यावसायिक रणनीतियों को पुनर्व्यवस्थित करके संकटों को अवसरों में परिवर्तित किया है और व्यापार, व्यवसाय, विनिर्माण और निवेश के लिए एक आकर्षक गंतव्य बना हुआ है. श्री गोयल ने कहा कि कनाडा और अमेरिका में निवेशकों और व्यापारिक नेताओं के साथ उनकी हालिया मुलाकातों से भारत की आर्थिक संभावनाओं में वैश्विक विश्वास स्पष्ट हुआ है. उन्होंने प्रस्तावित भारत-कनाडा मुक्त व्यापार समझौते के लिए मिली सकारात्मक प्रतिक्रिया और पेंशन फंड, बीमा कंपनियों और अन्य संस्थागत निवेशकों की मजबूत रुचि को रेखांकित किया.

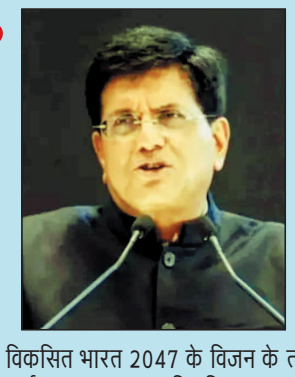

> मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि भारत एक सुरक्षित और संरक्षित वातावरण प्रदान करता है जहां बौद्धिक संपदा की रक्षा की जाती है, प्रौद्योगिकी सुरक्षित रहती है और डेटा गोपनीयता बनाकर रखी जाती है. उन्होंने कहा कि वैश्विक बाजारों को सेवाएं प्रदान करने वाले डेटा केंद्रों को 2047 तक आयकर से छूट मिलेगी, जिस वर्ष तक भारत का लक्ष्य विकसित भारत 2047 के विजन के तहत 30 लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था वाला एक विकसित राष्ट्र बनना है.

रुपया 39 पैसे कमजोर

मुंबई, 04 जून. अंतरबैंकिंग मुद्रा बाजार में रुपया बुधवार को 39.50 पैसे टूट गया और कारोबार की समाप्ति पर एक डॉलर 95.76 रुपये का बोला गया. पिछले कारोबारी दिवस पर भारतीय मुद्रा 17.50 पैसे की गिरावट में 95.3650 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुई थी. रुपये की शुरुआत आज सात पैसे नीचे 95.43 रुपये प्रति डॉलर पर हुई. इसके बाद इसका ग्राफ और नीचे की तरफ लुढ़कता गया. एक समय यह 95.80 रुपये प्रति डॉलर तक टूट चुका था, लेकिन अंत में 95.78 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुआ. अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल में रही तेजी ने रुपये पर दबाव बनाया. कच्चे तेल का मानक लंदन का ब्रेंट क्रूड वायदा 1.4 प्रतिशत चढ़कर 97.30 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंच गया. अमेरिका और ईरान के बीच तनाव बढ़ने के बाद यह तेजी देखी गयी है.

सोना फिर चमका, चांदी हुई सस्ती

545 रुपए उछला सोना

2,432 रुपए सस्ती हुई चांदी

नई दिल्ली, 4 जून. घरेलू सर्राफा बाजार में बुधवार को सोने की कीमतों में एक बार फिर तेजी देखने को मिली। मजबूत मांग और वैश्विक संकेतों के बीच सोना नई ऊंचाई की ओर बढ़ा, जबकि चांदी की कीमतों में गिरावट दर्ज की गई।देश के सर्राफा बाजार में सोने की चमक लगातार बरकरार है.

इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन (आईबीजेए) के अनुसार बुधवार को 24 कैरेट सोने की कीमत में 545 रुपए प्रति 10 ग्राम की बढ़ोतरी दर्ज की गई, जिसके बाद इसका भाव बढ़कर 1.56 लाख रुपए प्रति 10 ग्राम पहुंच गया. दूसरी ओर चांदी की कीमतों में नरमी देखने को मिली और एक किलो चांदी 2,432 रुपए सस्ती होकर 2.59 लाख रुपए प्रति किलो पर आ गई।वर्ष 2026 की शुरुआत से अब तक की बात करें तो सोने और चांदी दोनों ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है. 31 दिसंबर 2025 को 10 ग्राम सोने का भाव 1.33 लाख रुपए था, जो अब बढ़कर 1.56 लाख रुपए पर पहुंच चुका है. यानी इस साल अब तक सोना करीब 23 हजार रुपए महंगा हो चुका है. इसी तरह चांदी का भाव 2.30 लाख रुपए प्रति किलो से बढ़कर 2.59 लाख रुपए प्रति किलो हो गया है, जिससे इसकी कीमत में लगभग 29 हजार रुपए की बढ़ोतरी दर्ज हुई है. इस दौरान दोनों कीमती धातुओं ने रिकॉर्ड स्तर भी छुआ.

उतार-चढ़ाव के बीच बढ़त पर बंद हुआ शेयर बाजार

13.84 अंक पर पहुंचा सेंसेक्स

10.95 अंक पर आया निफ्टी

मुंबई, 04 जून. घरेलू शेयर बाजारों में गुरुवार को लिवाली हावी रही, हालांकि आईटी कंपनियों के दबाव में प्रमुख सूचकांक दिनभर के उतार-चढ़ाव के बाद हल्की बढ़त में बंद हुए. बीएसई का सेंसेक्स 13.84 अंक (0.02 प्रतिशत) की तेजी में 74,360.01 अंक पर बंद हुआ.

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 सूचकांक भी 10.95 अंक यानी 0,05 प्रतिशत ऊपर 23,416.55 अंक पर पहुंच गया।प्रमुख सूचकांकों में बड़ा उतार-चढ़ाव देखा गया. दिनभर ये कभी लाल तो कभी हरे निशान में रहे. इस दौरान सेंसेक्स नीचे 73,807.30 अंक तक और ऊपर 74,544.24 अंक तक गया।वृहत बाजार में शुरू से ही अच्छी तेजी रही. निफ्टी मिडकैप-50 सूचकांक 0.43 प्रतिशत और स्मॉलकैप-100 सूचकांक 0.49 प्रतिशत टूट गया.

क्लबफुट पीड़ित 10 हजार बच्चों को नई उम्मीद

कानपुर/अहमदाबाद, 4 जून. वर्ल्ड क्लबफुट डे के अवसर पर अदाणी फाउंडेशन और अनुष्का फाउंडेशन ने बुधवार को तीन वर्ष की एक महत्वपूर्ण साझेदारी की घोषणा की, जिसके तहत क्लबफुट से प्रभावित 10,000 से अधिक बच्चों को उपचार और उपचार के बाद देखभाल की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी. यह कार्यक्रम राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशनके सहयोग से मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और हिमाचल प्रदेश में लागू किया जाएगा. कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ उत्तर प्रदेश के कानपुर स्थित मान्यवर कांशीराम संयुक्त चिकित्सालय एवं ट्रॉमा सेंटर में किया गया. क्लबफुट के मामलों की अधिक संख्या को देखते हुए कानपुर को इस अभियान के प्रमुख केंद्रों में शामिल किया गया है.

इस्पात क्षेत्र की रफ्तार बरकरार

कच्चे और तैयार इस्पात उत्पादन में सालाना आधार पर तेजी

ग्रीन स्टील पहल को भी मिला जोर

नई दिल्ली, 4 जून. भारत के इस्पात क्षेत्र ने मई 2026 में भी अपनी मजबूत विकास गति बनाए रखी. कच्चे और तैयार इस्पात दोनों के उत्पादन में साल-दर-साल बढ़ोतरी दर्ज की गई, जो देश में निर्माण, अवसंरचना और विनिर्माण गतिविधियों की निरंतर बढ़ती मांग को दर्शाता है.

मई 2026 में कच्चे इस्पात का उत्पादन 14.21 मिलियन टन रहा, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 2.9 प्रतिशत अधिक है. इस दौरान तैयार इस्पात का उत्पादन 13.94 मिलियन टन तक पहुंच गया, जिसमें 7.7 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई. वहीं, तैयार इस्पात की खपत 14.33 मिलियन टन रही, जिसमें 9.0 प्रतिशत का उछाल दर्ज किया गया. अप्रैल-मई 2026 के दौरान भी उत्पादन और खपत दोनों में मजबूती देखी गई. कच्चे इस्पात का उत्पादन 28.04 मिलियन टन और तैयार इस्पात का 27.36 मिलियन टन रहा.

इस दौरान खपत भी 27.36 मिलियन टन तक पहुंच गई, जो सालाना आधार पर 8.7 प्रतिशत अधिक है. विशेषज्ञों के अनुसार, निर्माण और अवसंरचना क्षेत्र में लगातार बढ़ती मांग इस तेजी की मुख्य वजह है. आयात और निर्यात-मई 2026 में इस्पात आयात 0.69 मिलियन टन और निर्यात 0.51 मिलियन टन रहा, जो मई 2025 की तुलना में क्रमशः 62.5 प्रतिशत और 29.9त्न अधिक है.

अप्रैल-मई 2026 के दौरान आयात 1.37 मिलियन टन और निर्यात 0.98 मिलियन टन रहा. भारत इस अवधि में शुद्ध आयातक बना हुआ है. उद्योग क्षमता और निवेश-वित्त वर्ष 2025-26 में भारत की कुल कच्चे इस्पात उत्पादन क्षमता लगभग 220 मिलियन टन तक पहुंच गई है.

ओमान के बाजार में निर्यात बढ़ाने का महत्वपूर्ण अवसर

नई दिल्ली, 04 जून. केंद्रीय कपड़ा मंत्रालय ने कहा कि भारत-ओमान व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते के प्रभावी होने से देश के टेक्सटाइल, कपड़ा और हस्तशिल्प क्षेत्र के लिए वहां शुल्क मुक्त प्रवेश मिलने लगा है जिससे वहां दूसरे देशों के मुकाबले भारतीय निर्यात की प्रतिस्पर्धा क्षमता बढ़ी है.

मंत्रालय की विज्ञप्ति में कहा गया है कि वर्ष 2025-26 में ओमान को भारत का टेक्सटाइल, कपड़े और हस्तशिल्प का निर्यात 9.51 करोड़ अमेरिकी डॉलर के बराबर था जबकि ओमान हर साल कुल मिला कर लगभग 59.8 करोड अमेरिकी डॉलर के टेक्सटाइल और कपड़े का आयात करता है. अभी भारत ओमान के आयातित टेक्सटाइल्स एवं कपड़ा बाजार में लगभग 11 प्रतिशत स्थान रखता है और उसका तीसरा सबसे बड़ा टेक्सटाइल आपूर्तिकर्ता है. मंत्रालय का कहना है कि ऐसे में सेपा एक्सपोर्ट को काफी बढ़ाने और बाज़ार में ज़्यादा हिस्सा पाने का एक साफ मौका देता है. भारतीय एक्सपोर्टर ओमान में कपड़ों, मेड-अप्स, कालीनों और कपड़ों जैसे अहम क्षेत्रों में में बढ़ती माँग का फायदा उठाने के लिए अच्छी स्थिति में हैं. इन क्षेत्रों में खासकर मूल्यवान और डिज़ाइन-पर केंद्रित शामिल हैं. सेपा के तहत ओमान ने भारत के साथ व्यापार में टेक्सटाइल और कपड़ों की 945 प्रशुल्क श्रेणियों में तुरंत शुल्क मुक्त प्रवेश दे दिया है. इससे वहां भारतीय कपड़ा उत्पादों पर पांच प्रतिशत का शुल्क खत्म हो गया है जो ओमाना एमएफएन व्यवस्था व्यापार में सार्वाधिक वरीयता वाले देश की डब्ल्यूटी व्यवस्था के तहत सभी देशों पर लगने वाले पांच प्रतिशत के शुल्क से छुटकारा मिल जाएगा.

> यह समझौता ओमान को भारत के टेक्सटाइल एक्सपोर्ट को तेज़ करने और दुनिया के बाज़ार में एक प्रतिस्पर्धी और भरोसेमंद आपूर्तिकर्ता के तौर पर भारत की स्थिति को और मज़बूत करने के लिए तैयार है. गत वर्ष 18 दिसंबर को केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और ओमान सल्तनत के वाणिज्य, उद्योग और निवेश संवर्धन मंत्री क़ैस बिन मोहम्मद अल यूसुफ़ ने इस समझौते पर हस्ताक्षर किए थे.

वेकोलि की डिजिटल पहल सम्मानित

डॉ. पांडे को 'डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन लीडर ऑफ द ईयर' अवार्ड

मुंबई, 04 जून. वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (वेकोलि) के सीएमडी डॉ. हेमंत शरद पांडे को 29 मई, 2026 को नई दिल्ली में गवर्नेंस नाउ द्वारा आयोजित 11वें पीएसयू आईटी फोरम एवं अवार्ड्स समारोह में प्रतिष्ठित डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन लीडर ऑफ द ईयर अवार्ड से सम्मानित किया गया.

यह सम्मान डॉ. हेमंत शरद पांडे को लोकसभा के माननीय सांसद अनुराग ठाकुर के करकमलों से प्रदान किया गया. वेकोलि में डिजिटल परिवर्तन, सुशासन, पारदर्शिता तथा तकनीक आधारित कार्य संस्कृति को बढ़ावा देने में डॉ. पांडे के दूरदर्शी नेतृत्व और उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें इस अवार्ड से सम्मानित किया गया।इस अवसर पर वेकोलि को भी अपनी उत्कृष्ट डिजिटल पहलों के लिए अवार्ड फॉर एक्सीलेंस से सम्मानित किया गया. वेकोलि के स्वस्थ पोर्टल, आईटी इम्प्लीमेंटेशन श्रेणी में तथा डीएमएस (डिस्पेंसरी मैनेजमेंट सिस्टम) आईटी इनोवेशन श्रेणी में सर्वोत्कृष्ट रहे. यह सम्मान वेकोलि द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग, डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार तथा कर्मचारी-केंद्रित नवाचारों के सफल क्रियान्वयन की राष्ट्रीय स्तर पर मिली स्वीकृति को दर्शाते हैं.

गेहूं मजबूत, दालों और खाद्य तेलों में घट-बढ़

नई दिल्ली, 04 जून. घरेलू थोक जिंस बाजारों में गुरुवार को चावल का औसत भाव लगभग स्थिर रहा. चावल के साथ चीनी की कीमत भी कमोबेश पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर ही टिकी रही. गेहूं में तेजी देखी गयी जबकि दालों और खाद्य तेलों में घट-बढ़ का रुख रहा. औसत दर्जे के चावल की औसत कीमत 3,857 रुपये प्रति क्विंटल पर लगभग स्थिर रही. गेहूं तीन रुपये महंगा हुआ और 2,785 रुपये प्रति क्विंटल बोला गया. आटे की कीमत भी दो रुपये बढ़ गयी. दाल-दलहनों में मसूर दाल औसतन 10 रुपये प्रति क्विंटल टूट गयी.

एंजल वन ने अजीत नारायणन को सीटीओ नियुक्त किया

मुंबई, 04 जून. महाराष्ट्र में एंजल वन लिमिटेड ने श्री अजीत नारायणन को अपना मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी नियुक्त करने की घोषणा की है.

श्री नारायणन एंजल वन के इंजीनियरिंग विभाग का नेतृत्व करेंगे. वे प्लेटफॉर्म के आर्किटेक्चर, परफ़ॉर्मेंस और स्केलेबिलिटी को आकार देंगे. साथ ही सभी टीमों में तेज़ी से काम पूरा करने की गति को बढ़ाएंगे. वे एंजल वन की मुख्य टेक्नोलॉजी की नींव को मजबूत करेंगे, जरूरी सिस्टम में कृत्रिम बुद्धिमता -आधारित इंटेलिजेंस को शामिल करेंगे और मज़बूत उच्च प्रदर्शन वाले प्लेटफ़ॉर्म तैयार करेंगे. एंजल वन के ग्रुप चीफ़ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर, अंबरीश केंघे ने कहा कि हम एक ऐसे मोड़ पर हैं जहाँ टेक्नोलॉजी और एआई इस तरीके को बदल रहे हैं कि कैसे एक अरब भारतीयों तक वित्तीय उत्पाद पहुँचाए जाते हैं.

समाचार विशेष

एमएलसी चुनाव में असली लड़ाई गणित की!

पटना. बिहार विधान परिषद (एमएलसी) की 9 सीटों और एक उपचुनाव को लेकर राजनीतिक सरगर्मी तेज हो गई है. पहली नजर में मुकाबला एकतरफा दिख रहा है, लेकिन असली खेल सीटों से ज्यादा वोटों के गणित और वरीयता आधारित मतदान में छिपा है.

विधानसभा में संख्या बल के आधार पर एनडीए मजबूत स्थिति में नजर आ रहा है. 243 सदस्यीय विधानसभा में एनडीए के पास करीब 202 विधायक हैं. मौजूदा समीकरणों के अनुसार एक सीट जीतने के लिए लगभग 25 विधायकों का समर्थन पर्याप्त माना जा रहा है. ऐसे में एनडीए के लिए 8 सीटों का रास्ता लगभग साफ दिखाई देता है. राजद, कांग्रेस, वाम दलों और अन्य विपक्षी विधायकों की कुल संख्या एक सीट निकालने की स्थिति में है. महागठबंधन की रणनीति इस बात पर केंद्रित रहेगी कि उसके सभी विधायक मतदान करें और वोटों का बिखराव न हो. यदि उम्मीदवारों की संख्या सीटों के बराबर या उससे कम रहती है तो कई प्रत्याशी निर्विरोध जीत सकते हैं. लेकिन सीटों से अधिक उम्मीदवार मैदान में उतरते हैं तो मतदान और मतगणना की जटिल प्रक्रिया शुरू होगी, जिससे राजनीतिक समीकरणों में नई हलचल आ सकती है.

दूसरी वरीयता बदल सकती है तस्वीर- एमएलसी चुनाव में केवल पहली पसंद का वोट ही मायने नहीं रखता. यदि पहले दौर में सभी सीटों का फैसला नहीं होता, तो दूसरी और आगे की वरीयताओं के वोट गिने जाते हैं. यही वजह है कि राजनीतिक दल अपने विधायकों को वोटिंग के दौरान विशेष निर्देश देते हैं. हाल के चुनावों में देखा गया है कि कुछ विधायकों के मतदान नहीं करने या वरीयता वोटों के अलग तरीके से इस्तेमाल होने से नतीजे प्रभावित हुए हैं. इसलिए दलों की नजर सिर्फ अपने संख्या बल पर नहीं बल्कि विधायकों की एकजुटता पर भी रहेगी.

सियासी संदेश भी होगा अहम

एमएलसी चुनाव का परिणाम सिर्फ परिषद की सीटों तक सीमित नहीं रहेगा. यह सत्ता पक्ष की संगठनात्मक मजबूती और विपक्ष की एकजुटता की भी परीक्षा माना जा रहा है. यदि अनुमानित 8-1 का आंकड़ा कायम रहता है तो यह एनडीए के लिए राजनीतिक बढ़त का संकेत होगा, जबकि विपक्ष किसी भी अतिरिक्त सफलता को मनोवैज्ञानिक जीत के रूप में पेश करेगा. 18 जून को होने वाले चुनाव और उसके बाद की मतगणना यह तय करेगी कि विधानसभा की ताकत सीधे सीटों में बदलती है या फिर वरीयता वोटों का गणित कोई नया राजनीतिक संदेश देता है.

बंगाल में प्रशांत किशोर की अचानक एंट्री!

जो आदमी टीएमसी तोड़ रहा, उसे पीके ने क्यों मिलाया फोन?

कोलकाता. पश्चिम बंगाल की राजनीति में हर पल समीकरण बदल रहे हैं. तृणमूल कांग्रेस ने अनुशासनहीनता और पार्टी विरोधी गतिविधियों के आरोप में अपने दो बड़े विधायकों, ऋतब्रता बनर्जी और संदीपान साहा को पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया है.

मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी द्वारा एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में इन दोनों नेताओं का नाम लिए जाने के तुरंत बाद टीएमसी आलाकमान ने यह सख्त कदम उठाया. लेकिन असली धमाका तो इसके ठीक 24 घंटे बाद हुआ. मीडिया में छपी खबर के मुताबिक, देश के सबसे चर्चित चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर ने सीधे ऋतब्रत बनर्जी को फोन घुमा दिया. इस औचक फोन कॉल के सामने आते ही कोलकाता से लेकर दिल्ली तक के राजनीतिक गलियारों में हड़कंप मच गया है. हर कोई हैरान है कि आखिर जो आदमी टीएमसी को सीधे तौर पर नुकसान पहुंचा रहा था, उसे पीके ने इतनी जल्दी फोन क्यों किया. रिपोर्ट के मुताबिक, प्रशांत किशोर ने ऋतब्रता बनर्जी से फोन पर काफी देर तक बातचीत की. पीके ने उनसे बेहद सीधे शब्दों में पूछा कि आखिर ऐसी क्या नौबत आ गई थी कि उन्हें अचानक तृणमूल कांग्रेस से राज्यसभा सांसद के पद से इस्तीफा देना पड़ गया? प्रशांत किशोर यह बारीकी से समझना चाहते थे कि पार्टी के भीतर ऐसे क्या हालात बन गए थे, जिसकी वजह से ऋतब्रता को इतना बड़ा और कड़ा फैसला लेना पड़ा और उन्होंने बिना किसी से चर्चा किए सीधे स्पीकर को अपना इस्तीफा भेज दिया.

आईपैक का मुद्दा भी तेजी से गरमाया

इस हाई-प्रोफाइल बातचीत के सामने आने के बाद राजनीतिक पंडितों के बीच यह सवाल भी तेजी से तैर रहा है कि क्या दोनों के बीच आईपैक से जुड़े अंदरूनी मुद्दों पर भी कोई चर्चा हुई है? प्रशांत किशोर, जो कभी तृणमूल कांग्रेस के सबसे बड़े संकटमोचक और मुख्य रणनीतिकार हुआ करते थे, उनका इस तरह अचानक एक्टिव होना कई नए और बड़े सियासी संकेत दे रहा है.

अभिषेक का नेता बन पाना मुश्किल

कोलकाता. पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की समस्याएं बढ़ती जा रही हैं. उनकी पार्टी के विधायक, सांसद और सामान्य कार्यकर्ता भी दूर होते जा रहे हैं. यह समस्या इस वजह से है कि तृणमूल कांग्रेस के अंदर ममता बनर्जी ने दूसरी लाइन के नेता तैयार नहीं किए.

उन्होंने अपने भतीजे अभिषेक बनर्जी को अपना उत्तराधिकारी तो बना दिया लेकिन अभिषेक ने कभी भी संगठन या जमीन की राजनीति नहीं की. वे ममता बनर्जी के सत्ता में आने के बाद सक्रिय हुए और हमेशा सरकार चलाने वाला काम किया. किसी सकारात्मक काम के लिए उनकी चर्चा पिछले 15 साल में नहीं हुई है. यही कारण है कि उनकी छवि विलेन वाली बनी और आज उसका खामियाजा उनको भुगतना पड़ रहा है. सोचें, ममता बनर्जी की पार्टी में अब कौन नेता है, जो अभिषेक के साथ चलेगा! नेता ही नहीं हैं. ममता बनर्जी के साथ जैसे मुकुल रॉय, सुदीप बंदोपाध्याय, फिरहाद हाकिम, पार्थ चटर्जी, मदन मित्रा, शोभनदेब, अणुब्रत मंडल आदि थे वैसा कोई नेता अभिषेक के साथ नहीं है.

विशेष | सपा ने दिया टिकट बंटवारे का फॉमूला, राहुल-अखिलेश कर सकते हैं बैठक

योगी के खिलाफ फिर साथ आएंगे लड़के!

लखनऊ. उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव को लेकर सरगर्मी तेज हो गई है. इसी बीच राजनीतिक गलियारों में चर्चा तेज हो गई है कि कांग्रेस और समाजवादी पार्टी (सपा) एक बार फिर साथ मिलकर चुनाव लड़ सकते हैं.

सूत्रों के अनुसार, दोनों दलों के बीच सीट बंटवारे को लेकर शुरुआती स्तर पर चर्चा शुरू हो चुकी है और जल्द ही दोनों दलों के वरिष्ठ नेता इसे लेकर बैठक कर सकते हैं. जानकारी के मुताबिक, सपा ने इस पूरी प्रक्रिया की जिम्मेदारी पूर्व आईएएस अधिकारी आलोक रंजन को सौंपी है. रंजन एक सर्वे टीम का नेतृत्व कर रहे हैं, जो अलग-अलग विधानसभा क्षेत्रों का आकलन कर रही है. बताया जा रहा है कि आलोक रंजन की रिपोर्ट में कांग्रेस को गठबंधन के तहत करीब 70 से 75 सीटें देने का सुझाव दिया गया है.

बताया जा रहा है कि आलोक रंजन ने सीटों के चयन को लेकर एक खास फार्मूला तैयार किया है. इसमें सबसे पहले संभावित उम्मीदवारों की जमीनी पकड़ और लोकप्रियता की टोह ली जाएगी. इसके लिए दो स्तरों पर सर्वे कराया जा रहा है. पहला निजी एजेंसियों के जरिए और दूसरा स्थानीय नेताओं से मिलने वाले फीडबैक के आधार पर. सपा नेतृत्व का मानना है कि टिकट केवल उन्हीं लोगों को दिया जाए जिनकी जनता के बीच मजबूत पकड़ हो और जिनकी जीत की संभावना ज्यादा हो.

सपा प्रमुख अखिलेश यादव खुद इस पूरी प्रक्रिया पर नजर बनाए हुए हैं. पार्टी के अंदर यह संदेश दिया गया है कि इस बार टिकट वितरण में सिफारिश या दबाव की राजनीति नहीं चलेगी. उम्मीदवारों का चयन पूरी तरह सर्वे और जमीनी रिपोर्ट के आधार पर किया जाएगा. इससे पहले कांग्रेस और समाजवादी पार्टी ने 2017 के विधानसभा चुनाव साथ मिलकर लड़ी था. हालांकि, इस गठबंधन को हार का सामना करना पड़ा था

गठबंधन को लेकर बंटी राय- हालांकि, गठबंधन और सीट बंटवारे को लेकर दोनों पार्टियों के बीच सब कुछ सही नहीं है. दोनों ही तरफ के कई नेता सीटों के बंटवारे को लेकर खुश नहीं बताए जा रहे हैं.

इन कांग्रेस नेताओं को टिकट मिलना तय

इसके अलावा यह भी चर्चा है कि गठबंधन के तहत तय सीटों के अलावा कुछ ऐसे कांग्रेस नेताओं को भी मौका दिया जा सकता है, जिनकी जीत की संभावना मजबूत मानी जाती है. इनमें कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू, प्रवक्ता अखिलेश सिंह और पूर्व सांसद पी.एल. पुनिया के परिवार से जुड़े नामों की चर्चा हो रही है.